विचार बिन्दु

अवसर तो सभी को ज़िंदगी में मिलते हैं किंतु उनका सही वक्त पर सही तरीक़े से इस्तेमाल कितने कर पाते हैं? –संतोष गोयल

इतना काफ़ी है!

संस्कृत विद्वान मम्मट ने अपने ग्रंथ काव्य प्रकाश में काव्य के छह प्रयोजन बताए हैं: काव्यंयशसेऽर्थकृतेव्यवहारविदेशिवेतरक्षतये। सद्यः परनिर्वृतयेकान्तासम्मिततयोपदेशयुजे।। यहां यह जान लेना उचित होगा कि संस्कृत में काव्य का प्रयोग उसी अर्थ में होता था जिस अर्थ में आज सामान्य बोलचाल में साहित्य का प्रयोग होता है। आचार्य मम्मट यहां काव्य (अर्थात साहित्य) के जो प्रयोजन बता रहे हैं वे हैं – यश, अर्थ, व्यवहार ज्ञान, शिव से इतर अर्थात अशिव की क्षित, कांता (पत्नी) के समान उपदेश और तत्काल परम आनंद की प्राप्ति। स्थूल रूप से आज भी साहित्य के ये ही प्रयोजन हैं। कुछ लोग पैसों के लिए लिखते हैं, कुछ नाम/ख्याति के लिए। कुछ लोग लिख कर दुनिया की बुराइयों को नष्ट या कम करना चाहते हैं। 1936 में लखनऊ में आयोजित हुए प्रगतिशील लेखक संघ के प्रथम अधिवेशन में प्रेमचंद ने जो अध्यक्षीय भाषण दिया था, और जो साहित्य का उद्देश्य: प्रगतिशीलता शीर्षक से सुलभ है, उसमिं इस महान कथाकार ने कहा था कि साहित्यकार या कलाकार स्वभावत: प्रगतिशील होता है। अगर यह उसका स्वभाव न होता, तो शायद वह साहित्यकार ही न होता। उसे अपने अन्दर भी एक कमी महसूस होती है और बाहर भी। इसी कमी को पूरा करने के लिए उसकी आत्मा बेचैन रहती है। अपनी कल्पना में वह व्यक्ति और समाज को सुख और स्वच्छंदता की जिस अवस्था में देखना चाहता है, वह उसे दिखाई नहीं देती। इसलिए, वर्तमान मानसिक और सामाजिक अवस्थाओं से उसका दिल कुढ़ता रहता है। वह इन अप्रिय अवस्थाओं का अन्त कर देना चाहता है, जिससे दुनिया जीने और मरने के लिए इससे अधिक अच्छा स्थान हो जाये। यही वेदना और यही भाव उसके हृदय और मस्तिष्क को सक्रिय बनाए रखता है।'' प्रकारांतर से प्रेमचंद वही बात कह रहे हैं जो आचार्य मम्मट ने 'शिवेतरक्षतये' के द्वारा कही थी। आज बहुत सारे लेखक दुनिया की स्थितियों को देखकर व्यथित होते हैं और वे चाहे जिस विधा में लिखें, अपने लेखन के द्वारा उस स्थिति को बदलने का उपक्रम करते हैं। यह बात जान ली जानी ज़रूरी है कि साहित्यकार के पास वैसी कोई ताकत नहीं होती है जैसी किसी नेता के पास, अधिकारी के पास या न्यायाधीश के पास होती है। इसलिए यह उम्मीद करना कि कोई एक कहानी या एक कविता लिखेगा और समाज की कोई बुराई दूर हो जाएगी, अव्यावहारिक होगा। लेकिन यह भी सही है कि साहित्य अपने पाठक को संस्कारित करता है और बदलता है। एक अच्छी कहानी, कविता या किसी भी अन्य विधा में आप कुछ भी पढ़ें, पढ़ने के बाद आप स्वयं को थोड़ा बदला हुआ अवश्य महसूस करेंगे।

संस्कृत में एक अभिव्यक्ति बहुत प्रचलित है –स्वांत: सुखाय। सृजन के संदर्भ में इसका प्रयोग होता है। हमने जो किया, जो लिखा, अपने सुख के लिए किया–लिखा। लेकिन क्या वाकई हम केवल अपने सुख के लिए लिखते हैं? अगर ऐसा है तो उसे सार्वजनिक क्यों करते हैं? बस, इसी सवाल के जवाब में यह रहस्य छिपा है कि जो स्वांत: सुखाय है उसमें भी कहीं न कहीं पर हित की बात जुड़ी है। वही बात जिसे प्रेमचंद ने साहित्यकार को अंदर ही अंदर एक कमी महसूस होती है कहा है। मैं दुनिया को जैसा देखना चाहता हूं, जब उसे वैसी नहीं पाता हूं तो बेचैन होता हूं, और लिखता हूं। लोग ऐसा करते–करते उम्र गुज़ार देते हैं। बहुत बार यह सवाल भी किया जाता है कि दुनिया में इतने बड़े–बड़े विचारक–लेखक वगैरह हुए, लेकिन दुनिया अच्छी तो फिर भी नहीं हुई! इस सवाल की ध्वनि यह होती है कि लिखना–विखना सब बेकार के काम हैं। इनसे कुछ होता–जाता नहीं है। और ऐसा नहीं है कि इस तरह की बातें वे ही करते हों जो ख़ुद नहीं लिखते हैं। बहुत बार ये बातें लिखने वालों के मन को भी व्यथित करती हैं। हाल में मेरे एक बेहद संवेदनशील मित्र ने, जो एक प्रतिष्ठित लेखक भी हैं, मुझसे यह सवाल किया: किसी एक समय में सही बात का पक्ष लेने वालों की संख्या लगातार घटती ही चली जाती है। इसके कारण होने वाले दुख को नियंत्रित करने का क्या उपाय है?'' ज़ाहिर है कि सवाल करते समय उनके मन में भी यही बात रही होगी कि हम जो लिखते हैं उसे बहुत कम समर्थन मिलता है। यह पीड़ा केवल उनकी ही नहीं है। हम सबकी है। अपने चारों तरफ हम देखते हैं कि अनावश्यक और बेहूदा बातों पर जितना शोर–शराबा होता है, सार्थक बातों पर उतनी ही चुप्पी की चादर फैली रहती है। एक लेखक अपना कीमती समय देकर कुछ लिखे और कोई उसके समर्थन में गर्दन भी न हिलाए, तो उसका व्यथित होना स्वाभाविक है। यह लगता है कि वर्तमान समाज में यह असंवेदशीलता और अधिक सघन हो गई है। दुष्यंत कुमार ने लिखा था न कि इस शहर में वो कोई बारात हो या वारदात/ अब किसी भी बात पर खुलती नहीं हैं खिड़कियाँ।

> **एक आदमी सुबह-सुबह समुद्र के किनारे टहल रहा था। उसने देखा कि लहरों के साथ सैकड़ों मछलियाँ तट पर आ जाती हैं और जब लहरें पीछे जाती हैं तो मछलियाँ किनारे पर ही रह जाती हैं और धूप से मर जाती हैं। जब उसने यह मंज़र देखा तब लहरें ताज़ा थीं और मछलियाँ जीवित थीं। वह आदमी कुछ क़दम आगे बढ़ा, उसने एक मछली उठाई और उसे पानी में फेंक दिया। ऐसा वह बार-बार करता रहा। उस आदमी के ठीक पीछे एक और आदमी था जो यह नहीं समझ पा रहा था कि वह क्या और क्यों कर रहा है। वह उसके पास आया और पूछा, ''तुम क्या कर रहे हो? यहाँ तो अनगिनत मछलियाँ हैं। तुम उनमें से कितनों को बचा सकोगे? और इससे क्या फ़र्क़ पड़ेगा?'' उस आदमी ने कोई जवाब नहीं दिया, दो क़दम आगे बढ़कर एक और मछली को उठाकर पानी में फेंक दिया और बोला, ''इससे इस एक मछली को तो फ़र्क़ पड़ता है।''**

तो बात लेखक की निराशा की है। क्या बुराई के प्रति समाज की उदासीनता और उसके लगभग स्वीकार से उसे मान लेना चाहिए कि अब किसी को उसकी ज़रूरत नहीं है। वह कुछ नहीं कर सकता। उसे लिखना बंद कर देना चाहिए? कभी संत कबीर ने लिखा था, सुखिया सब संसार है, खायैअरूसोवै। / दुखिया दास कबीर है, जागैअरूरोवै।।'' तो, कबीर के वंशजों को तो दुखी ही रहना है। यही उनकी नियति है। और ऐसा भी नहीं है कि लेखन का कोई असर नहीं होता है। लेखन का, और अच्छे काम का। हमारे मित्र और हिंदी के शीर्षस्थ कथाकारों में से एक स्वयं प्रकाश ने एक संस्मरणात्मक किताब लिखी थी– 'धूप में नंगे पांव'। इस किताब में वे एक अत्यंत मार्मिक प्रसंग लिखते हैं। स्वयं प्रकाश अपनी नौकरी के सिलसिले में सुदूर उडीसा (अब ओडिशा) के एक बहुत छोटे कस्बे सर्गीपल्ली में रह रहे थे।एक बार वे छुट्टियां बिता कर अजमेर से सर्गीपल्ली जा रहे थे। साथ में पत्नी, बहन और दो छोटी बेटियां थीं। सर्गीपल्ली पहुंचते–पहुंचते घुप्प अंधेरा हो गया और तेज़ बरसात होने लगी। हालात कुछ ऐसे बने कि ये चारों पानी के तेज़ बहाव में बस बहने ही को थे, कि अचानक एक वृद्ध साइट इंजीनियर जिनका नाम महापात्र है, अपने साथियों के साथ इनकी मदद को आते हैं और इन्हें अपनी झोंपड़ियों में ले जाते हैं। इस प्रसंग के बाद लेखक लिखता है, अगर इस दुनिया में सौ–दो सौ महापात्र बाबू भी हैं तो इससे अच्छी जगह और कहां हो सकती है? और क्या तुम्हारी ज़िंदगी में कभी कोई महापात्र बाबू नहीं आए? मेरा यह मानना है कि एक सजग और सचेत लेखक हमेशा यही महापात्र बाबू वाली भूमिका निबाहता है और उसकी इस भूमिका को कभी न कभी कोई स्वयं प्रकाश कृतज्ञतापूर्वक याद भी करता है।

यह लिखते हुए मुझे अनायास कहीं पढ़ी हुई एक कथा याद आ रही है। कथा इस तरह है: एक आदमी सुबह–सुबह समुद्र के किनारे टहल रहा था। उसने देखा कि लहरों के साथ सैकड़ों मछलियाँ तट पर आ जाती हैं और जब लहरें पीछे जाती हैं तो मछलियाँ किनारे पर ही रह जाती हैं और धूप से मर जाती हैं। जब उसने यह मंज़र देखा तब लहरें ताज़ा थीं और मछलियाँ जीवित थीं। वह आदमी कुछ क़दम आगे बढ़ा, उसने एक मछली उठाई और उसे पानी में फेंक दिया। ऐसा वह बार–बार करता रहा। उस आदमी के ठीक पीछे एक और आदमी था जो यह नहीं समझ पा रहा था कि वह क्या और क्यों कर रहा है। वह उसके पास आया और पूछा, ''तुम क्या कर रहे हो? यहाँ तो अनगिनत मछलियाँ हैं। तुम उनमें से कितनों को बचा सकोगे? और इससे क्या फ़र्क़ पड़ेगा?'' उस आदमी ने कोई जवाब नहीं दिया, दो क़दम आगे बढ़कर एक और मछली को उठाकर पानी में फेंक दिया और बोला, ''इससे इस एक मछली को तो फ़र्क़ पड़ता है।''

तो मुझे लगता है कि भले ही पल भर को हमें लगे कि हमारी कोई नहीं सुन रहा है, यथार्थ यह है कि कोई न कोई तो हमारी बात सुनता ही है, और बदलता भी है। क्या हमारे लिखते–बोलते रहने के लिए इतना काफ़ी नहीं है?

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल,
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

सिंध नरेश महाराजा दाहिर सेन का राष्ट्र प्रेम और बलिदान इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय

सिंध के अंतिम हिंदू शासक महाराजा दाहिर सेन के शहीद दिवस 16 जून पर विशेष आलेख

वासुदेव देवनानी

महाराजा दाहिर सेन, सिंध के अंतिम हिंदू शासक थे, जिन्होंने 8वीं शताब्दी की शुरुआत में सिंध (वर्तमान पाकिस्तान में) पर शासन किया था। दाहिर सेन का नाम सिंध के एक महान शासक के रूप में इतिहास में स्वर्णाक्षरों से लिखा हुआ है। वे राजा चच के सबसे छोटे पुत्र थे। दाहिर सेन के तख़्त पर आसीन होने से पहले इनके भाई चंद्रसेन राजा थे जो, बौद्ध मत के समर्थक बताये जाते थे। उनकी वीरता और शासनकाल की घटनाएं इतिहास में अहम् स्थान रखती हैं। वह एक शक्तिशाली और स्वतंत्र शासक थे, जिन्होंने अपने क्षेत्र की रक्षा एवं सिंध की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए कई लड़ाईयां लड़ी और अपनी वीरता का प्रदर्शन किया। उनकी कहानी आज भी दक्षिण एशियाई इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय के रूप में पढ़ाई जाती है। उन्होंने सिंध को एक मजबूत और समृद्धशाली राज्य बनाया जो व्यापार और संस्कृति के केंद्र के रूप में भी जाना जाता था।

महाराजा दाहिर सेन का शासन काल 663 ईस्वी से 712 ईस्वी तक के मध्य बताया जाता है। उनके राज्य की राजधानी अलोर (अरोड़) में थी। उन्होंने सिंध को मजबूत राज्य बनाने के साथ ही सिंधु घाटी सभ्यता के संरक्षण के लिए भी अविस्मरणीय काम किया। उनका जीवन चरित्र कई इतिहास की किताबों में वर्णित है। 16 जून का दिन भारत के इतिहास का बहुत ही महत्वपूर्ण दिन है। इसी दिन सप्त सिंधु क्षेत्र के सिंध प्रदेश पर अरब हमलावरों का मुकाबला करते हुए सिंध नरेश महाराजा दाहिर सेन शहीद हुए थे।

इतिहासकारों के मुताबिक़ राजा दाहिर की हुकूमत पश्चिम में मकरान तक, दक्षिण में अरब सागर और गुजरात तक, पूर्व में मौजूदा मालवा के केंद्र और राजपूताने तक और उत्तर में मुल्तान से गुज़रकर दक्षिणी पंजाब तक फैली हुई थी। सिंध से ज़मीनी और समुद्री व्यापार भी होता था। राजा दाहिर इंसाफ़–पसंद थे। उनके शासन में तीन तरह की अदालतें थीं, जिन्हें कोलास, सरपनास और गनास कहा जाता था, बड़े मुक़दमे राजा के पास जाते थे जो सुप्रीम कोर्ट का दर्जा रखते थे। वर्तमान में, महाराजा दाहिर का यह शासन स्थल पाकिस्तान के सिंध प्रांत में है।

खलीफा अबद अल बिन यूसुफ अरब का खलीफा बना और उसने अबद हज्जाज बिन यूसुफ को इराक का सूबेदार नियुक्त किया। हज्जाज ने प्रारम्भिक सफलताओं के बाद जून 712 में मोहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में अरब सेना को सिंध पर हमला करने का आदेश दिया। उस समय चच वंश के महाराजा दाहिर सेन सिंध नरेश थे। यह राजवंश शौर्य और पराक्रम में बढ़ा–चढ़ा नाम था। वैसे भी सिंध सागर से जुड़ा हुआ था, इसलिए इस राजवंश ने सुरक्षा के पुख्ता इन्तजामात कर रखे थे। नगर के चारों ओर सुदृढ़ प्राचीर थी। किला भी काफी मजबूत था। मोहम्मद बिन कासिम ने सिंध के नगर देवल पर यह हमला बोला। देवल में एक ऐतिहासिक शिव मंदिर था। इसी मंदिर के कारण इस नगर को देवल या देवालय कहा जाता था। यह मंदिर और नगर वर्तमान कराची के नज़दीक ही था। उस समय सिंध प्रदेश की राजधानी अलोर थी। लेकिन राजधानी से भी ज्यादा जरूरी देवल की रक्षा करना अहम्था माना जाता था। मान्यता थी क्ि यदि अरब देवल को न जीत सके तो दोबारा शायद सिंध की ओर मुंह न करते लेकिन यदि मंदिर पर अरबों का कब्जा हो गया तो अरबों को आगे बढऩे का रास्ता मिल जाता। सिंध व्यापार का भी बहुत बड़ा केन्द्र था। इसलिए यदि सिंध पर अरबों का कब्जा हो जाता तो व्यापार का यह महत्वपूर्ण मार्ग शत्रु के हाथ में चला जाता।

महाराजा दाहिर सेन ने अपने दो पुत्रों जयसिंह और घरसिया तथा अनेक इष्टजनों के साथ युद्ध करने आगे आए। उन्होंने जिलोर में उनके बेटे जयसिंह के नेतृत्व में सेना की एक टुकड़ी तैनात कर रखी थी। जयसिंह ने अपनी अंतिम सांस तक मोर्चा संभाले रखा लेकिन धीरे–धीरे उसके सभी सैनिक मारे गए। कासिम ने जयसिंह को अपने पक्ष में करने हेतु अनेक प्रलोभन दिए। परन्तु जयसिंह ने सिंधु की साक्षी में मातृभूमि की रक्षा में अपने प्राण देना श्रेयस्कर समझा। अब अरब सेना देवल की प्राचीर तक आ पहुंची थी। अरब सेना देवालय की प्राचीर को भेद कर बार–बार अन्दर घुसने का प्रयास कर रही थी। उसके सैनिक तो धराशायी हो रहे थे, लेकिन देवल की प्राचीर को वे भेद नहीं पा रहे थे। दाहिर सेन स्वयं अपनी सेना का नेतृत्व कर रहे थे। देवालय के शिखर पर राज्य पताका फहरा रही थी। सिंध के लोगों का विश्वास था कि जब तक यह पताका शिखर पर फहराती रहेगी,तब तक सिंध अविजित ही रहेगा। लेकिन इस प्रतीक का यह महत्व अरब सैनिक नहीं जानते थे। इतिहास में प्रतीक ही किसी देश की गौरव गाथा का माध्यम बनते हैं।

प्रतीकों की रक्षा के लिए सेनाओं को मरते कटते देखा गया है। अरब सैनिक प्रतीकों के इस मनोवैज्ञानिक प्रभाव को समझ नहीं पा रहें थे लेकिन, घर के भेदिए इस रहस्य को जानते थे। इतिहास गवाह है कि भारत के पराभव में घर के इन्हीं भेदियों का हाथ रहा है। मोहम्मद बिन कासिम जब किसी भी तरह देवल की प्राचीर को भेद नहीं पा रहा था तो उसने घर के इन्हीं भेदियों की तलाश शुरू कीऔर देवल की जिस प्राचीर को भेदने में उसे सफलता नहीं मिल पा रही थी, पर भेदियों की तलाश में उसे अवश्य सफलता मिल गई। अब अरब सेना का सारा जोर किसी तरह देवल के शिखर पर फहरा रही उस पताका को ही गिराने में लग गया। सभी आग्नेय अस्त्र देवल के शिखर की ओर चलने लगे। अचानक वह पताका नीचे गिर पड़ी। सिंध सैनिकों में हलचल होने लगी। दाहिर सेन के निकटस्थ सलाहकारों ने अनुभव कर लिया कि हतप्रभ सिंध सैनिक अब ज्यादा देर तक शत्रु के सम्मुख टिक नहीं पाएंगे।

उन्होंने महाराजा को रणनीति के अनुसार किसी निकटस्थ प्रदेश में अपने परिवार के साथ आश्रय लेने का आग्रह किया लेकिन, सिंध नरेश ने सिंध की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए अनवरत लड़ाई जारी रखी और मातृभूमि की रक्षा करते हुए अपने प्राण देना ही बेहतर समझा। इस प्रकार महाराजा दाहिर सेन ने इतिहास की उज्जवल परम्परा की रक्षा करते हुए रणभूमि में लड़ते हुए अपने प्राण न्योछावर कर दिए। मोहम्मद बिन कासिम ने उन्हें आत्म समर्पण करने का अवसर भी दिया, लेकिन दाहिर सेन ने शहादत का रास्ता ही चुना।

महाराजा दाहिर सेन की बेटियां का बदला : – महाराजा दाहिर सेन सिंध की दो बेटियों, परमाल और सूर्या देवी थी, दोनों ने अपने पिता के साथ अरब आक्रमणकारियों के खिलाफ लड़ाई में भाग लिया था। जब अरब आक्रमणकारियों ने सिंध पर कब्जा कर लिया तो मुहम्मद बिन कासिम ने परमाल और सूर्या देवी को बंदी बना लिया गया। महाराजा दाहिर सेन सिंध की बहादुर बेटियों की शहादत एक ऐतिहासिक घटना है जो अरबआक्रमणकारियों के खिलाफ लड़ाई के दौरान हुई थी। बताया जाता है कि ख़लीफ़ा बिन अब्दुल मालिक ने दोनों बेटियों को एक दो रोज़ आराम करने के बाद उनके हरम में लाने का आदेश दिया। एक रात दोनों को ख़लीफ़ा के हरम में बुलाया गया। ख़लीफ़ा ने अपने एक अधिकारी से कहा कि वो मालूम करके बताएं कि दोनों में कौन सी बेटी बड़ी है। बड़ी ने अपना नाम सूर्या देवी बताया और उसने जैसे ही उनके चेहरे से नक़ाब हटाया तो ख़लीफ़ा उनकी ख़ूबसूरती देखकर दंग रह गए और उन्हें हाथ से अपनी तरफ़ खींचा लेकिन उन्होंने ख़ुद को छुड़ाते हुए कहा, ''बादशाह सलामत रहे, मैं बादशाह की क़ाबिल नहीं क्योंकि,ॅ ाादिल इमादुद्दीन मोहम्मद बिन क़ासिम ने हमें तीन रोज़ अपने पास रखा और उसके बाद ख़लीफ़ा की ख़िदमत में भेजा है। शायद आपका दस्तूर कुछ ऐसा है, बादशाहों के लिए ये बदनामी जायज़ नहीं।''

इतिहासकारों के अनुसार यह सुन ख़लीफ़ा, मोहम्मद बिन क़ासिम से बहुत नाराज़ हुए और आदेश जारी किया कि उन्हें संदूक़ में बंद कर दरबार में हाज़िर किया जाए। जब ये फ़रमान मोहम्मद बिन क़ासिम को पहुंचा तो वो अवधपुर में था। तुंरत आदेश का पालन हुआ और उन्हें दरबार पहुंचाया गया। ख़लीफ़ा के आदेश से मुहम्मद बिन कासिम को मौत के घाट उतार दिया गया। कहा जाता है कि उन्हें कच्ची चमड़ी में लपेटकर मारा गया था। यह एक बहुत ही दर्दनाक और क्रूर सज़ा थी जिसमें व्यक्ति को कच्ची चमड़ी में लपेटकर तब तक मारा जाता था जब तक कि उनकी मृत्यु न हो जाए। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि राजा दाहिर की बेटियों ने इस तरह क़ासिम से अपने माता पिता और सिंध के बहादुर सैनिकों की मौत का बदला ले लिया। जब परमाल और सूर्या देवी को पता चला कि मुहम्मद बिन कासिम की मृत्यु हो गई है, तो उन्होंने भी अपने पेट में कटार घोप कर अपनी जान दे दी। उनकी शहादत को सिंध के इतिहास में आज भी एक महत्वपूर्ण घटना के रूप में याद किया जाता है तथा उन्हें एक वीर और साहसी बेटियों के रूप में सम्मानित किया जाता है। परमाल और सूर्या देवी की कहानी एक ऐतिहासिक घटना है जो अरब आक्रमणकारी मुहम्मद बिन कासिम के सिंध पर आक्रमण के दौरान हुई थी।

विरासत के अवशेष :–महाराजा दाहिर सेन की विरासत के अवशेष के रूप में भारत और पाकिस्तान में कई ऐतिहासिक स्थल और स्मारक हैं जो उनके जीवन और शासनकाल के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं। इनमें से कुछ प्रमुख स्थलों में एक प्राचीन शहर अरोर शामिल है जो वर्तमान में पाकिस्तान के सिंध प्रांत में स्थित है। माना जाता है कि यह महाराजा दाहिर सेन सिंह की राजधानी थी। इसीप्रकार रावलकोट किला भी सिंध, पाकिस्तान में स्थित है। रावलकोट भी महाराजा दाहिर सेन के शासनकाल में एक महत्वपूर्ण स्थल था। इन ऐतिहासिक स्थलों के अलावा, महाराजा दाहिर की विरासत भारत में भी देखी जा सकती है, खासकर राजस्थान और गुजरात में, जिनके सिंध के साथ ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध रखते रहें हैं। यहां के कुछ क्षेत्रों में महाराजा दाहिर सेन की याद में त्योहार और समारोह मनाए जाते हैं। दाहिर सेन की कहानियां लोककथाओं के रूप में आज भी प्रचलित हैं। उनके जीवन और शासनकाल के बारे में कई पुस्तकें और लेख भी लिखे गए है।

महाराजा दाहिर सेन सिंघ के स्मारक :–महाराजा दाहिर सेन की स्मृति में बनाए गए स्मारक में सिंध में स्थित एक प्राचीन मंदिर शामिल है। राजस्थान के अजमेर में भी महाराजा दाहिर सेन सिंघ का एक स्मारक है। दाहिर सेन की विरासत आज भी इतिहास में अपना अहम स्थान रखती है तथा सिंध के लोगों के साथ ही भारतीयों के लिए भी प्रेरणा का स्त्रोत हैं। इसके साथ ही राष्ट्रवादियों ने राजा दाहिर दिवस मनाने का आगाज कर महाराजा दाहिर सेन सिंध की स्मृति को चिर स्थाई बनाने का प्रयास किया है।

–वासुदेव देवनानी–
अध्यक्ष, राजस्थान विधानसभा।

वर्षा जल की एक-एक बूंद का संरक्षण होगा, प्रदेश में भू-जल संकट से निजात मिलेगी

मानसिंह मीना

राजस्थान वह भूमि है जहां रजवाड़ों, भामाशाहों ने बावड़ियां खुदवाई थी, तालाब बनवाए थे, और जहां हर बूंद को मोती की तरह सहेजा जाता था, लेकिन बीते दशकों में जल संकट ने इस गौरवशाली परंपरा को लगभग भुला दिया है। सूखते तालाब, गहराते भू–जल स्तर और बारिश के पानी का व्यर्थ बहना, ये सब मिलकर रेगिस्तान को और अधिक प्यासा बना रहे हैं। इन सभी समस्याओं को सिरे से ख़त्म करने के लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान की शुरूआत कर संपूर्ण प्रदेश में एक अनूठी पहल की है। प्रदेश में इसी कड़ी में चल रहे कर्मभूमि से मातृभूमि'अभियान को भी इस दिशा में एक ज़रूरी कदम कहा जा सकता है। प्रदेश में इस अभियान का शुभारम्भ जयपुर से मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा 15 जनवरी को किया गया। भू–जल विभाग द्वारा इस विचार को धरातल पर उतारने का बीड़ा उठाया गया, खासकर उन जिलों में जहां भू–जल संकट गहराता जा रहा था। प्रदेश में सिरोही, पाली, जोधपुर, बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, झुंझुनूं और जयपुर से इसकी शुरुआत हुई और अब राज्य के अन्य जिलों में भी अभियान अंतर्गत भूजल रिचार्ज/जल संरक्षण संरचनाओं का निर्माण कार्य प्रारम्भ किया जा रहा है। यह कोई सामान्य सरकारी योजना नहीं, बल्कि एक भावनात्मक पुल है जो उन लाखों प्रवासी राजस्थानियों को उनकी जन्मभूमि से जोड़ रहा है, जो देश–दुनिया में अपनी मेहनत से नाम कमा चुके हैं।

कैसे शुरू हुआ ये अभियान :– प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की 'कैच द रन थीम पर जल शक्ति मंत्रालय द्वारा जल शक्ति अभियान वर्ष 2019 से प्रारम्भ किया गया। प्रत्येक वर्ष जल शक्ति अभियान हेतु अलग–अलग थीम रखी गई। वर्ष 2025 में जल शक्ति अभियान हेतु जल संचय जन भागीदारी–जन जागरूकता की थीम रखी गई। प्रधानमंत्री द्वारा जल संरक्षण को राष्ट्रीय प्राथमिकता मानते हुए जल संचय जन भागीदारी अभियान का शुभारंभ 6 सितम्बर 2024 को गुजरात के सूरत में किया गया।

अभियान का मुख्य उद्देश्य :– वर्षा जल की एक–एक बूंद का संरक्षण, संवर्धन व जल पुनर्भरण संरचनाओं का निर्माण जन–सहभागिता से कर राज्य में गिरते भू–जल स्तर को रोकने के साथ–साथ आम–जन को जागरूक कर जल के प्रति व्यवहार परिवर्तन करना एवं जन भागीदारी से जल संचयन कर जन आंदोलन बनाया जाना इस अभियान का मुख्य उद्देश्य है। राजस्थान के इतिहास में जल–प्रबंधन का विशिष्ट स्थान रहा है। बावड़ियां, कुंड, जोहड़ और तालाब... ये सिर्फ जल स्त्रोत नहीं थे, बल्कि सामाजिक मेलजोल के केंद्र भी थे। 'कर्मभूमि से मातृभूमि' अभियान उस विरासत को आधुनिक तकनीक और जनभागीदारी के साथ जोड़ता है। जहां पहले राजा–महाराजा जल संरक्षण का बीड़ा उठाते थे, वहीं अब यह जिम्मेदारी जनता और प्रवासियों ने खुद उठाई है। कर्मभूमि से मातृभूमि अभियान से भू–जल स्तर की गिरावट पर रोकथाम, कृषि और घरेलू उपयोग के लिए जल की स्थायी उपलब्धता हो सकेगी। इस योजना का दिल है रिचार्ज शाफ्ट। ये खास संरचनाएं वर्षा जल को सहेजने का सबसे अच्छा और कारगर तरीका हैं। इसके माध्यम से सतह पर गिरा पानी व्यर्थ बहने के बजाय धरती की गोद में समा जाता है। इससे भूगर्भ का जल स्तर बढ़ जाता है। अभियान के अंतर्गत राज्य के अकार्यशील कुऐ, बोरिंग व हैण्डपंपों द्वारा भी वर्षा जल का भू–जल में कृत्रिम पुनर्भरण संबंधी कार्य किया जा रहा है। इसी के साथ–साथ क्षेत्र विशेष के आधार पर उपयुक्त कम लागत की जल संरक्षण संरचनाओं यथा रिचार्ज पिट, ट्रेन्स, रूफटॉप रेन वॉटर हार्वेस्टिंग संरचनाओं के निर्माण की अभिनव पहल भी भामाशाहों द्वारा की जा रही है। अब प्रवासी राजस्थानी अपने गांवों में रिचार्ज शाफ्ट एवं जल संरक्षण संरचनाएं बनवाने के लिए धन राशि व सहयोग दे रहे हैं। जिससे वर्षा जल सीधे जमीन के भीतर जाकर भूजल पुनर्भरण में मदद करेगा। यह केवल आर्थिक सहयोग नहीं, बल्कि संवेदनाओं का समर्पण है। प्रदेश के 41 जिलों की 11 हजार 266 ग्राम पंचायतों में इस अभियान के तहत जल संरक्षण व भूजल रिचार्ज हेतु संरचनाओं का निर्माण कार्य किया जा रहा है। राज्य में गिरते भू–जल स्तर को रोकने के साथ–साथ जल संरक्षण कार्यों द्वारा सम्पूर्ण राज्य लाभान्वित होगा व भविष्य के लिए सतत् व निर्बाध जल स्त्रोतों की सुनिश्चितता हो सकेगी।

जल संचय–जन भागीदारी अभियान ''कर्मभूमि से मातृभूमि'' के अन्तर्गत राज्य में लगभग कुल 45 हजार रिचार्ज एवं जल संरक्षण संरचनाओं का निर्माण आगामी 04 वर्षों में किये जाने का लक्ष्य रखा गया। वित्तीय वर्ष 2025–2026 में राज्य में 5000 रिचार्ज एवं जल संरक्षण संरचनाओं का निर्माण सामाजिक जिम्मेदारी निधि ;बेृत् निदकद्ध से कराये जाने की बजट घोषणा की गई है। अब तक लगभग 1 हजार 800 संरचनाओं का निर्माण कार्य पूर्ण किया जा चुका है और शेष कार्य प्रगतिरत है।

अभियान के अन्तर्गत रिचार्ज एवं जल संरक्षण स्थलों का चयन ग्राम विकास अधिकारियों द्वारा पंचायती राज विभाग के ई–पंचायत मोबाइल एप्लीकेशन पर किया जा रहा है। संरचना निर्माण कार्य पूर्ण होने के पश्चात् की जानकारी भी ई–पंचायत मोबाइल एप्लीकेशन पर अद्यतन की जा रही है। अब तक ग्राम विकास अधिकारियों द्वारा ई–पंचायत मोबाइल एप के माध्यम से 45 हजार लक्ष्य के विरूद्ध 35 हजार रिचार्ज स्थलों का चयन किया जा चुका है।

–मानसिंह मीना ,
उप निदेशक, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, जयपुर।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 16 जून, 2025

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, पंचमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2082, धनिष्ठा नक्षत्र रात्रि 1:14 तक, वैधृति योग दिन 11:07 तक, तैतिल करण दिन 3:32 तक, चन्द्रमा आज दिन 1:10 से कुम्भ राशि में संचार करेगा। 2

ग्रह स्थिति: सूर्य–मिथुन, चन्द्रमा–मकर, मंगल–सिंह, बुध–मिथुन, गुरू–मिथुन, शुक्र–मेष, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह राशि में।

आज रवि योग रात्रि 1:16 से आरम्भ होगा। आज नाग पंचमी (बंगाल में), कोकिला पंचमी, वैधृति पुण्य है। पंचक दिन 1:10 से आरम्भ होंगे।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:19 तक, शुभ 9:02 से 10:44 तक, चर 2:10 से 3:52 तक, लाभ अमृत 3:52 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:36, सूर्यास्त 7:18

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है।

वृष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

कर्क
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

सिंह
स्वास्थ्य में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। दिनचर्या में सुधार होगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद दूर होने लगेंगे।

तुला
घर–परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृश्चिक
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

धनु
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

मकर
मन:स्थिति ठीक रहेगी। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मीन
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।